समाज

आसाराम बापू हत्या और सम्पत्ति कब्ज़े में फँसे

धार्मिक पूँजीवाद के अपराध या अपराधी पूँजीवाद का धर्म

● सुजय

हाल ही में आसाराम बापू के मठों में चार रहस्यमय मौतें हुईं। आसाराम बापू के अहमदाबाद और छिंदवाड़ा के आश्रमों में एक महीने के भीतर चार बच्चों की मौतें हुईं। इसके बाद से आसाराम बापू के आश्रम में होने वाले क्रियाकलापों के बारे में लगातार सवाल खड़े हो रहे हैं। जाँचकर्त्ताओं ने जब आश्रम के लोगों से पूछताछ को आगे बढ़ाना शुरू किया तो देश के अलग-अलग हिस्सों में आसाराम के चेलों ने उत्पात मचाना शुरू कर दिया। अपने चेलों की भक्ति से साहस पाकर आसाराम बापू ने भी सत्ता से लेकर न्यायपालिका तक को चुनौती दे डाली कि अगर हिम्मत है तो उसे गिरफ़्तार करके दिखाए! सुप्रीम कोर्ट ने आसाराम को इस मामले में किसी भी क़िस्म की राहत देने से साफ़ इन्कार कर दिया, लेकिन जैसा कि उम्मीद की जा सकती थी इस धार्मिक गुरू के ख़िलाफ़ अभी तक कोई कार्रवाई नहीं हो सकी है। और आगे भी कोई कार्रवाई होगी इसकी उम्मीद कम ही है। इसके पहले भी आसाराम बापू पर कई आपराधिक मामले दर्ज किये जा चुके हैं जिनमें से अधिकांश सम्पत्ति कब्ज़ा करने के मामले हैं। बीच-बीच में अन्य कई आरोप भी आसाराम बापू पर लगते रहे हैं।

आसाराम बापू ने अपने धार्मिक कैरियर की शुरुआत जिस जगह से की थी वहाँ के ही एक निवासी अशोक ठाकोरे ने आसाराम बापू के विरुद्ध उनकी पारिवारिक भूमि के 5 एकड़ पर कब्ज़े का आरोप लगाया है। मोटेरा गाँव के अशोक ठाकोरे ने आसाराम बापू पर आरोप लगाया है कि उन्होंने गुरू पूर्णिमा के दिन उनकी 5 एकड़ ज़मीन पर कैम्प लगाने के लिए उनके पिता से आज्ञा माँगी जो उनके पिता ने दे दी। लेकिन इसके बाद वह ज़मीन कभी उन्हें वापस नहीं मिली। इसी प्रकार सूरत के पास जहाँगीरपुरा में एक किसान अनिल व्यास की 34,400 वर्ग मीटर ज़मीन पर आसाराम बापू के आश्रम ने कब्ज़ा कर लिया। गुजरात सरकार तो पूरी की पूरी ही आसाराम बापू की चेला मण्डली नज़र आती है क्योंकि उसने इस अवैध कब्ज़े को नियमितीकृत कर दिया। हालाँकि बाद में गुजरात हाईकोर्ट ने इस नियमितीकरण को अवैध ठहराया और यह मामला अभी कोर्ट में चल रहा है। दिल्ली के राजौरी गार्डन की सुदर्शन कुमारी के मकान के भूतल पर आसाराम बापू के आश्रम ने कब्ज़ा कर लिया है। यह मामला भी न्यायाधीन है। आसाराम बापू ने तो सरकार तक को नहीं छोड़ा। बिहार सरकार ने आरोप लगाया है कि आसाराम बापू ने पटना में बिहार सरकार की ज़मीन पर कब्ज़ा कर लिया है। साथ ही, आसाराम बापू पर रतलाम में 4.7 करोड़ रुपये की बिजली चोरी का आरोप है। ये तो बस कुछ उदाहरण हैं। आसाराम बापू के अलावा कोई भी ऐसा धार्मिक बाबा नहीं है जो अवैध सम्पत्ति एकत्र करने, हत्या, बलात्कार, चोरी आदि जैसे मामलों में फँसा न हो।

ऐसे में मन में सहज ही यह प्रश्न उठता है कि धर्म को इन मोहमाया की वस्तुओं से क्या लेना-देना? धार्मिक बाबाओं का सम्पत्ति, स्त्री आदि के प्रति मोह का क्या अर्थ? जहाँ तक संन्यासी जीवन, साधु जीवन का प्रश्न है तो इनका सम्बन्ध तो परलोक सुधारने के लिए होता है! लेकिन इन बाबाओं के जीवन को देखकर तो लगता है कि धर्म उनके इहलोक को ही स्वर्गिक बनाने का औज़ार बन गया है!

धर्म वैसे तो हमेशा ही शासक वर्गों के हाथ में एक महत्वपूर्ण औज़ार रहा है। साधु, सन्तों, पादरियों, मौलवियों का इस्तेमाल हमेशा से ही शासकों ने किया है और आज भी वे कर रहे हैं। सामन्तवाद के दौर में भी यूरोप में चर्च द्वारा और हमारे यहाँ पुरोहितों-पण्डितों द्वारा राजा की सत्ता के दिव्य वैधीकरण के बिना राजा या सामन्त की सत्ता का राजनीतिक जस्टिफ़िकेशन पूरा नहीं होता था। ज़ाहिरा तौर पर, अन्तिम जस्टिफ़िकेशन तो बल से मिलता है, लेकिन शासक वर्गों के वर्चस्व के लिए यह वैचारिक जस्टिफ़िकेशन बेहद ज़रूरी होता है। तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टि के अभाव में और एक वर्ग समाज में आम मेहनतकश जीवन की आर्थिक और सामाजिक असुरक्षा के कारण समाज के आम मेहनतकश वर्ग सामन्तवाद के दौर के पहले से ही धर्म की शरण में जाते रहे हैं। पूँजीवाद ने जहाँ राज्य के लिए धर्म से वैधीकरण लेने की ज़रूरत को समाप्त कर दिया, वहीं नागरिक समाज (सिविल सोसायटी) में शासक वर्ग के किलों के रूप में धार्मिक संरचनाओं की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गयी। यही कारण है कि पूँजीवाद जो वैज्ञानिकता और तार्किकता व आधुनिकता का ढोल बजाते हुए इतिहास में आया था, उसने अधिकांश जगहों पर दिखाने के लिए राज्य के मामलों में धर्म के प्रत्यक्ष दख़ल को तो ख़त्म किया (हालाँकि वास्तव में ऐसा नहीं

है), लेकिन समाज में एक ऐसी असुरक्षा और अलगाव की स्थिति पैदा की कि धर्म के नये-नये आधुनिक रूपों और संस्करणों ने जनमानस को और बुरी तरह से जकड़ लिया। भारत में अनगिनत बाबाओं का कुकुरमुत्तों की तरह गली-मोहल्लों में उग आना और उनकी विशाल चेला मण्डलियाँ पैदा होने के पीछे यही कारण है।

लेकिन पूँजीवाद ने धर्म का न सिर्फ़ उपयोग किया बल्कि उसे स्वयं ही एक पूँजीवादी उपक्रम बना दिया है। धर्म अब एक काफ़ी मुनाफ़े वाला धन्धा बन चुका है और किसी भी पूँजीवादी क्षेत्र की तरह इसमें भी काफ़ी प्रतिस्पर्द्धा है। मार्क्स ने कहा था कि पूँजीवाद अब तक की सबसे गतिमान उत्पादन पद्धति है और यह अपनी छवि के अनुरूप एक विश्व की रचना कर डालता है। पूँजीवाद ने धर्म के साथ ऐसा ही किया है। इसने इसे पूँजीवादी धर्म में इस कदर तब्दील कर दिया है कि धर्म स्वयं एक धन्धा बन गया है। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था, अगर दक्षिण भारत के सामन्तवादी धर्म के व कुछ अन्य ग़ौरतलब अपवादों को छोड़ दें, जहाँ मन्दिर अर्थव्यवस्था के रूप में मन्दिर ही सबसे बड़े ज़मींदार बन गये थे। चर्च भी यूरोप में भूस्वामी बने थे लेकिन वे सामन्तवाद के सारे आर्थिक नियम-क़ानूनों के अनुरूप नहीं चलते थे। आज पूँजीवाद ने धर्म के साथ जो किया है वह कुछ अलग ही है। यह धर्म का पूर्ण व्यावसायीकरण है। और जहाँ भी व्यावसायीकरण होता है, वहाँ अपराधीकरण साथ में स्वत: ही होता है। आज धर्म के नाम पर अरबों-खरबों के वारे-न्यारे हो जाते हैं। मठों में देशभर में खरबों रुपयों की सम्पत्ति जमा है। बाबाओं की अपनी निजी सम्पत्ति की गणना करें तो उसके लिए कई गीगाबाइट्स की हार्ड डिस्क की आवश्यकता पड़ेगी! कई बाबाओं के तो अपने निजी हवाई जहाज़ और हेलीपैड तक हैं! ये देश के किसी भी अरबपति-खरबपति को टक्कर दे सकते हैं। स्वयं आसाराम बापू के देश और विदेश में मिलाकर क़रीब 350 आश्रम हैं जिनके पास अथाह सम्पत्ति है। आज स्वामी रामदेव एक धार्मिक बाबा तो है ही, साथ ही वह पतंजलि कम्पनी के सीईओ भी हैं। जी हाँ, वह कारपोरेट जगत के एक कुशल प्रबन्धक भी हैं। स्वामी रामदेव बाबाओं की नयी पैदावार में सबसे आधुनिक हैं और साथ ही सबसे फ़ासीवादी। धार्मिक फ़ासीवाद और फ़ासीवादी राष्ट्रवाद को अपने प्रवचनों की चाशनी में ढालकर स्वामी रामदेव ने भारत में फ़ासीवादी उभार को मदद पहुँचाने का हर सम्भव प्रयास किया है। हाल ही में स्वामी रामदेव ने भारत स्वाभिमान अभियान शुरू किया है। यह अभियान हर तरह से अन्धराष्ट्रवादी पुनरुत्थानवादी फ़ासीवादी विचारधारा का एक नमूना है। श्री श्री (?!) रविशंकर का 'आर्ट ऑफ़ लिविंग' तो सीधे-सीधे फ़ासीवाद से जुड़ा हुआ है। याद रहे कि महाराष्ट्र में पकड़े गये हिन्दू फ़ासीवादी आतंकवादी सशस्त्र प्रशिक्षण रविशंकर के आर्ट ऑफ लिविंग के शिविर में ही कर रहे थे। हालाँकि रविशंकर ने इससे हाथ झाड़ लिया और जैसा कि हमारा धर्मनिरपेक्ष राज्य है, इसने कुछ भी नहीं किया। रविशंकर के ऊपर भी यौन उत्पीड़न, हत्या आदि जैसे आरोप लम्बे समय से लगते रहे हैं। लेकिन अभी तक सभी धार्मिक बाबा और गुरू दण्ड संहिता के दायरे के बाहर रहे हैं। यहाँ एक क़तार में सारे बाबाओं के उदाहरण की कोई आवश्यकता नहीं है। इस सभी बाबाओं को तमाम नेताओं और चुनावी पार्टियों का समर्थन और सहयोग प्राप्त है। ख़ासतौर पर भाजपा इन्हें लेकर बहुत जज़्बाती रहती है। आसाराम बापू के फँसने पर भी एकमात्र भाजपा उसे बचाने आयी। कारण भी है। आडवाणी स्वयं आसाराम बापू के यहाँ नियमित तौर पर जाने वाले चेलों में से एक हैं। नरेन्द्र मोदी का भी इस अपराधी बाबा से काफ़ी स्नेह है। यही कारण है कि आप गुजरात राज्य कार्यालयों, राज्य परिवहन की बसों में आसाराम बापू के फोटो और सन्देश बड़े पैमाने पर लगे देख सकते हैं। उसके कई चेले तो भाजपा के महत्वपूर्ण पदाधिकारी भी हैं! रविशंकर के भक्तों में हर चुनावी पार्टी के लम्पट शामिल हैं! उसके आर्ट ऑफ़ लिविंग शिविर में निराकार से एकरूप हो जाने के नाम पर जो लम्पटई और गन्ध फैलती है, उसमें लोट लगाने के लिए देशभर से कुण्ठित छात्र-युवा, लम्पट नेता, पूँजीपति, व्यभिचारी नौकरशाह, सभी पहुँचते हैं। यही हाल, वैविध्यपूर्ण रूपों में सभी बाबाओं और उनकी चेला मण्डलियों का है। इनके आश्रम व्यभिचार, अपराध और देह व्यापार के अड्डे बन रहे हैं और इनके भीतर की जाँच-पड़ताल करना ही असम्भव है, क्योंकि इनका काम परलोक सुधारने के लिए तपस्या करना नहीं है, बल्कि यहाँ पर ऐसे-ऐसे गोरखधन्धे धर्म के नाम पर चल रहे होते हैं जिनकी कल्पना करना भी मुश्किल है। कभी-कभार कुछ निकलकर सामने आ जाता है तो थोड़ा-बहुत अन्दाज़ा चलता है।

सोचने की बात यह है कि यहाँ सवाल धर्म के अपराधीकरण का नहीं है। यह तो महज़ एक लक्षण है। असल सवाल है धर्म के पूँजीवादीकरण का। धर्म हमेशा से शासक वर्गों के हथियार का काम करता रहा है। धर्म ने हमेशा ही शासक वर्गों के वर्चस्व को पूर्ण बनाने में मदद की है। आज भी कर रहा है। पूँजीवाद के भ्रष्ट, अनाचारी, दुराचारी होने के साथ ही धर्म का अनाचारी, भ्रष्टाचारी और दुराचारी होना स्वाभाविक है। इस पर इस बात का रोना नहीं रोया जा सकता है कि हाय-हाय! शुद्धतावादी पारलौकिक धर्म बर्बाद हो गया! धर्म भ्रष्ट हो रहा है! यह किसी नैसर्गिक परिघटना पर आश्चर्य प्रकट करने जैसा होगा। धर्म कभी पारलौकिक था ही नहीं! यह तो हमेशा से इहलौकिक था, और हम सामान्य नश्वरों से कहीं ज़्यादा इहलौकिक! इसलिए यह तो होना ही था! पूँजीपति धार्मिक बनकर अपने पापों को धोने का प्रयास करते हैं; धर्म पूँजीवादी बनकर उन रंगरेलियों के मज़े लेना चाहता है जो पूँजीपतियों को नसीब होते हैं! इसीलिए धार्मिक गुरू अब प्राथमिक तौर पर पूँजीपति और धनकुबेर हैं और आध्यात्मिक गुरू बाद में जो विलासिता-बीमार मानसिकता-अपराध के बजबजाते कीचड़ में लोटपोट हो रहे हैं। ●